If the Centre has any regard for the Constitution and the Resolution passed by Parliament in 1956, it should immediately sanction financial assistance to Tamil Nadu. Or else, the people of Tamil Nadu will give a befitting reply to the Congress as the hustings!

Thank you.

SHRI S. MUTHU MANI (Tamil Nadu): Madam, I would also like to associate myself with the sentiments expressed by my colleague, Shri V. Rajan Chellappa. It is high time that the Central Government took effective steps to implement the prohibition policy which was so strongly advocated by Mahatma Gandhi, the Father of the nation. So, I request the Central Government to come forward and take appropriate steps to implement the prohibition policy all over India and to provide necessary financial assistance to all the States.

Negligence in the maintenance of monuments Ajanta and Alora by the Department of civil aviation and Tourism

डा० बापू कालदाते (महाराष्ट्र) : उपाध्यक्ष महोदया, मैं एक अंतर्राष्ट्रीय विरासत के प्रति जो उपेक्षा पर्यटन विभाग दिखाता है, उसके संदर्भ में आपके माध्यम से कुछ बातें कहना चाहता हूं। आप स्वयं जानती है कि यूनिस्को की रिपोर्ट में यह बात दर्ज की गई है कि हिन्दुस्तान में दो अंतर्राष्ट्रीय विरासत के स्थान महत्वपूर्ण है और इसमें अजंता, एलौरा का जिक्र किया है। दूसरा नाम है ताज का। इसके अगल-बगल में देखने लायक बहुत कुछ चीजें हैं। जो सुविधायें शॉपिंग की होती है, होटल की होती हैं इसके हद तक तो वहां कोई कमी नहीं है। एक तरफ से वह एक एतिहासिक विरासत है औरंगाबाद में अजन्ता और एलौरा के एरिया। वैसे तो इंडस्ट्रियल डवलप्ड टाउनशिप भी है और मुझे लगता है कि प्राचीन संस्कृति तथा आधुनिक भारत का एक समुचित दर्शन उस जगह पर जाने से मिलता है। सबसे बड़ी दुःख की बात हमको यह है कि इतने महत्वपूर्ण विरासत के प्रति इस शासन का सम्पूर्णतया उपेक्षावृत्ति से देखने का तरीका आज तक चलता आया है। कोई भी पर्यटक स्थान को अगर विकसित करना हो तो सरकार की दृष्टि से तीन बातों की आवश्यकता है। एक तो उस केन्द्र की सूचना—उस केन्द्र के आने-जाने के लिए यातायात की सुविधा और उस केन्द्र के लिए जो आधारभूत संरचनाये लगती हैं, उसका निर्माण होना चाहिए। अब औरंगाबाद की तरफ देखिए। वहां हफ्ते में 7 दिन फ्लाईट नहीं जाती है, केवल 5 दिन के लिए जाती है। अब इसके इंफार्मेशन के बारे में एक बुकलैट, एक ब्रोशर, स्पेशली अजन्ता, एलौरा के बारे में निकालकर सारी दुनियां के जो अपने टूरिस्ट सेंटर हैं और देश में जितने टूरिस्ट सेंटर हैं, वहां भेजने का कोई प्रयास मैंने देखा नहीं है। अजन्ता, एलौरा के बारे मे मैंने एक भी किताब राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन विभाग के माध्यम से निकली हुई नही देखी है और न उसकी चर्चा और प्रचार इन्होंने किया है। There should be aggressive advertisement of such a beautiful place. जिसके बारे में एक अद्वितीय, अदभुत, तिक्षणीय, विलोभनीय जगह होते हुए भी पूर्णतया उपेक्षित रखा गया है। पांच दिन फ्लाईट चलती है दो दिन चलती नहीं है। इसका कोई कम्युनिकेशन माउथ से या नोर्थ से नहीं है। हमने बार-बार इसकी मांग की है।

बोम्बे, औरंगाबाद-बगलौर गोवा से एक फ्लाईट आप जोड़ दीजिए, तो बहुत लोग चाहते हैं कि औरंगाबाद आयें। लेकिन 7 दिन में से अगर 5 दिन फ्लाईट चले तो वहा जाना मुश्किल हो जाता है। हम गोवा जा नहीं सकते, वह चाहें कि हम बंगलौर जायें, तो कोई नही जा सकता कई सालों से मैं इस बात को मिनिस्टर साहब के ध्यान में लाने की कोशिश कर रहा हूं। लेकिन इसमें कोई सफलता नही मिली। . . . (व्यवधान)

मौलाना अबैदुल्ला खान आजमी . मिलेगी भी नहीं। . . . (व्यवधान)

डा० बापू कालदाते : इसके लिए मैं कहता हूं कि एक तो उसकी सूचना सारी दुनियां में जाए । मैं अभी वहां जाकर आया हूं । जो अजंता, एलौरा के टूरिस्ट हैं, जो वहां के होटल मालिक हैं, उन्होंने हमको बुलाया और बताया कि यहां यह-यह हमारी दिक्कतें हैं । वहां बाकी सुविधाएं है, लेकिन यातायात की कोई सुविधा नहीं है, कोई ट्रेन नहीं है । अभी तो ब्रोड गेज हो गई है । रेल मंत्री जी बैठे हुए हैं । मैंने तो यह भी सुझाव दिया है कि आप नांदेण से अमृतसर तक अगर गुरु गोबिंद सिंह जी के नाम से ट्रेन शुरु कर सकते हैं तो वह दिल्ली को कनेक्ट कर देगी । नांदेण से लेकर अमृतसर तक लोग जाएंगे और औरंगाबाद इसके बीच में पड़ता है । वही हालत बम्बई की होगी । अगर बम्बई से नांदेण तक रेल आपने शुरू कर दिया है मैंने सुना है । लेकिन ऐसी कोई यातायात की सुविधा कुछ नहीं है । दूसरी बात एक तो उसको साउथ से और नार्थ से जोड़ना बहुत आवश्यक है । ट्रेन की बात मैंने कही । रोड की हालत बहुत बुरी है । अगर विदेश के यात्री आते हैं तो उनके लिए एक अच्छी संरचना वहां चाहिए । आप आइए अजंता के पास वहां न टॉयलेटस की व्यवस्था है, न अच्छे रेस्टोरेंट है, न रहने की कोई सुविधा है । मुझे यह लग रहा है कि सरकार की जो नीति है लो कॉस्ट डिस्टिनेशन की, वह गलत है । टूरिस्ट सेंटर की हद तक जहां तक विदेश के यात्री आते हैं वह Low-cost destination means low-facility destination, low-efficiency destination. That means everything is low.

आप देखिए कि अजंता एलोरा में पचास पैसे में आप प्रवेश कर सकते है । मेरा सुझाव है कि जो भारतीय यात्री होंगे या पर्यटक होंगे, उनके लिए आप पचास पैसे रखिए लेकिन जो विदेश से लोग आते हैं वे खर्च करने के लिए तैयार होते है । हम विदेश जाते है तो हमने देखा है कि दस डॉलर, बीस डॉलर से नीचे वाला कोई पर्यटक केन्द्र नहीं है यहां क्यों नहीं हम करते ? भारतीय यात्रियों के लिए पचास पैसे का रखिए लेकिन विदेशी को दस डालर देने में कोई फर्क नहीं पड़ता । वह पैसा आप उनकी सुविधाओं के लिए दे सकते हैं । यही हालत गाइड्स की है । यहां अच्छे गाइड्स हों, भिन्न-भिन्न भाषाओं के गाइडस हों उनकी शिक्षा की व्यवस्था हो, इन सारी चीजों की तरफ सरकार का कोई ध्यान नहीं है मुझे ऐसा लगता है । कई बार कहा गया कि अजंता के परिसर में जापान के कुछ लोग आने वाले है, उ**सका** क्या हुआ अभी तक मुझे पता नहीं है लेकिन सरकार को इस अजंता एलोरा को, इस अंतर्राष्ट्रीय विरासत को दुनिया के सामने लाने के लिए और दुनिया के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए जो आधारभूत संरचनाएं करनी चाहिए, वह सरकार तुरंत करे । जो लोग देखकर आते हैं और कहते हैं कि सर यह तो हमने कभी देखा नहीं कि ऊपर से नीचे कोई इमारत हो सकती है । जब "कैलाश" देखते हैं तो लगता है कि कोई आर्किटेक्चरल फेंटेसी है । कभी सुना नहीं, न तो दुनियां में कहीं है कि ऊपर से शुरु किया गया और नीचे... What a fantastic architectural foresight those people might have got! लेकिन ये देखने के लिए आते हैं लेकिन आप कहें लोगों को यह देखने लायक चीज है तो ही लोग आएंगे । होटल इतने है, मुझे तो लगता है कि औरंगाबाद में इतने होटल बने हुए हैं कि अभी जाकर खड़े हो तो सौ-डेढ़ सौ होटल तो नजर आते हैं । सुविधाएं प्राइवेट सेक्टर की हद तक मुझे लगता है कि काफी हैं । सरकार की तरफ से कोशिश करनी होगी । शॉपिंग सेंटर कहिए, जो कुछ भी कहिए वहां है लेकिन उसके अतिरिक्त भी कई जगहें हैं जहां लोग जा सकते हैं । औरंगाबाद में मकबरा है, दौलताबाद जैसा एक फोर्ट है लेकिन मेरी एक राय है कि सरकार अपनी इस उपेक्षा वृत्ति को छोड़ दे । वहां की प्राइवेट इंडस्ट्रीज वाले लोग हैं । अब हम तो सुनते हैं कि प्राइवेट एअर-फ्लाइट्स शुरु हो गई हैं । There is no private flight to Aurangabad.

ईस्ट-वेस्ट का एक हवाई-जहाज आता है और चला जाता है लेकिन It is a Bombay-Aurangabad shuttle service. तो एक डायरेक्ट फलाइट के बारे में प्राइवेट हो तो प्राइवेट कहिए, सरकारी हो तो सरकारी कहिए लेकिन तुरंत इस उपेक्षा को छोड़ कर एक महत्वपूर्ण जो हमारी विरासत है इस महत्वपूर्ण विरासत को देश में और विदेशों में ज्यादा आकर्षित करने के लिए सरकार कदम उठाए, इतनी ही मेरी आप के माध्यम से सरकार से प्रार्थना है, धन्यवाद ।

मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी : मैडम, मैं अपने आप को इससे सम्बद्ध करता हूं ।

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Madam, I want to make only one point about the entry fee for foreigners. In the case of Taj they have done it and there is a very high entry fee for foreign tourists. The samething can be done here. Madam, at Aurangabad Airport there are not facilities. A very very few facilities are there which require the attention of the Government and the Civil Aviation Ministry. For all the seven days there should be air services from Delhi to Aurangabad and all of us totally support what Bapu Kaldate has said.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Even I support the views expressed by Mr. Kaldate because my daughter went there and she personally came and gave me the report. She asked me to go to that place but requested me not to go as Deputy Chairman. She said, "If you go as Deputy Chairman, everybody will do good things. You should go as an ordinary person incognito and go in some way so that nobody knows who you are." And she said, "You will know how people are exploited there."

श्री शंकर दयाल सिंह : मैडम आप रिपोर्ट तो क्या आप तो हीलिंग दे सकती हैं ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am giving the ruling.

रिपोर्ट तो करना ही पड़ता है ।

It is a very big thing. It is not only the airline but it is the entire (*Interruptions*)... Just a minute. One minute. It is the entire thing because this is a monument which is thousands of years old. They are using flash. They have to take the photographs. It is not permitted to use flash for the monument anywhere else in he world because that spoils the colour of the painting. They are using a lot of other things. These guides are exploiting the tourists and they are taking money. There is a lot of corruption going on there which I have discovered.

SHRI BALBIR SINGH (Punjab): My hon. colleague has suggested that there should be a train from Nanded to Amritsar. Nanded should be linked with Amritsar. It is a very welcome suggestion. Nanded is a famous Sikh pilgrimage. The hon. Railway Minister is here. It will be a great step towards national integration if this train is started.

श्री एस० एस० अहलूवालिया (बिहार) : रेल मंत्री महोदय यहां पर उपस्थित हैं । हम लोगों की मांग है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी के पुण्य स्थल नांदेड़ में अमृतसर का जो सम्पर्क है, इसको जोड़ने के लिए सिर्फ 40 किलोमीटर बनाने की जरूरत है, यह सिर्फ 40 किलोमीटर दूर रह जाता है, जो परभनी तक पहुंचता है, उसके आगे नहीं पहुंचता है, खाली इसका ऐलान कर दें । दिल्ली तक ये चला रहे हैं ट्रेने, और उसे दिल्ली से बढ़ाकर चला दें नांदेड़ से लेकर अमृतसर तक ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं इससे अपने को संबद्ध करता हूं ।

उपसभापति : आपकी गाड़ी चला लेट रहे हैं । अहलुवालिया जी कह चुके हैं ।

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. K. JAFFER SHARIEF): We are considering this proposal.

उपसभापति : श्री जनार्दन यादव । आप अब जर्नादन यादव साहब को भी सपोर्ट कर दें । उनका भी रेल के बारे में ही है ।

Fire in Rajdhani Express

श्री जनार्दन यादव (बिहार) : महोदया, मैं आपके माध्यम से हाउस और खासकर के रेल मंत्री जी का इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि 27 तारीख को मैं राजधानी से पटना से दिल्ली के लिए चला । पटना और दानापुर के बीच में एक डिब्बे में आग लग गयी । पूरी गाड़ी की बिजली गुल हो गयी और वहां कोई कर्मचारी नहीं था । यात्रियों ने चेन खींचकर गाड़ी रुकवाई । लेकिन आग को बुझाने वाला कोई नहीं था । वहां जो महिलायें और बच्चे थे उन्होंने हल्ला और चीत्कार करना शुरु कर दिया । डिब्बा आग से जल रहा था और इसके कारण कुछ लोग आग से झुलस गए । राजधानी गाड़ी, जो एक प्रतिष्ठित गाड़ी है, इससे हमको लगता है यह गाड़ी अपनी प्रतिष्ठा को गंवा रही है । उसमें कोई मेंटिनेंस का काम नहीं हो रहा है । मेरी मांग है कि इस घटना की जांच की जाए कि यह आग क्यों और कैसे लगी । अगर यात्री आग को न बुझाते तो हो सकता था कि हजारों लोग मर जाते । इसलिए इस कांड की जांच होनी चाहिए । आग लगने से उस गाड़ी के एक थ्री टियर डिब्बे की छत भी उड़ गयी । मेरी मांग है कि इसकी जांच करवाई जाये और इस गाड़ी की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया जाय तथा इसके लिए जो दोषी हैं उनको सजा दी जाए ।

Formation of Aditya Vahini Sena by Shankaracharya of Puri.

श्री जनेश्वर मिश्र (उत्तर प्रदेश) : मैडम, मुझे बहुत चिंता के साथ इस सदन को सूचित करना है और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना है कि हिन्दुस्तान में जो बहुमत सम्प्रदाय और धर्म के लोग हैं, उनके दो जगत गुरु लोगों ने सेना गठित करने का ऐलान किया है । समाज में दलित, कमजोर सेना के नाम पर या वाहिनी के नाम पर संगठन बनाते हैं तो उससे कोई खतरा महसूस नहीं होता । लेकिन किसी धर्म स्थान से सेना गठित करने का प्रयास किया जाए तो यह एक चिंता की बात है । पुरी के शंकराचार्य निश्चलानन्द जी ने 21 अप्रैल को एक सेना का गठन किया और उस समय हाथ में तलवार लेकर उन्होंने जिस तरह की उग्र भाषा का इस्तेमाल किया है वह बड़ी ही खतरनाक बात है । निश्चलानन्द जी का रिकार्ड पहले से ही बहुत अच्छा नहीं था । अयोध्या के मसले पर जब सरकार ने प्रयास किया था कि धार्मिक गुरुओं से मशविरा किया जाए तो निश्चिलानन्द जी ने बात करने से मना कर दिया था । अयोध्या के मसले पर, बाबरी मस्जिद के मसले पर, हमको अच्छी तरह से याद है कि सरकार के मुखिया ने यह बयान दिया था कि विध्वंस का जवाब निर्माण हुआ करता है । उससे हमारे देश के लोगों को यह संदेश मिला कि जिस जगह विध्वंस हुआ है, हू-बहू उसी रूप में उसका वहां पर निर्माण किया जाएगा । लेकिन निश्चिलानन्द जी का बयान आया कि पहले तो वहां पर मस्जिद बनाने का सवाल नहीं और अगर बनती है तो बनने से पहले सरकार को मुस्लिम सम्प्रदाय से यह आश्वासन लेना पड़ेगा कि मक्का में भी शंकर भगवान की मूर्ति स्थापित की जाय, वहां शिवालय बने । धर्म की जगह पर बैठकर के, कम से कम हिन्दू धर्म के लोगों से मैं कहूंगा कि यह एक बड़ा सहिष्णु धर्म है, करुणा का धर्म है, दया का धर्म है और किसी भी शंकराचार्य ने इस प्रकार की उग्र भाषा का इस्तेमाल नहीं किया । अभी-अभी उनका बयान मदर टेरेसा के खिलाफ छपा है । उसमें उन्होंने कहा है कि मदर टेरेसा गरीबों की सेवा हिन्दुस्तान में कर रही है और इस सेवा के बहाने वह इसाई धर्म का प्रचार कर रही है । इन निश्चिलानन्द शंकराचार्य ने जब अपने आश्रम में सेना का गठन किया और तलवार लेकर लोगों ने शपथ ली तो हिन्दुस्तान में जो अल्पसंख्यक हैं जिनकी तादाद कम है